

# Pane Ke Baad - Sat Chakron Ke Devta

Date : 25th November 1973  
Place : Mumbai  
Type : Public Program  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 12
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	13 - 23
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आपको कुछ भी नहीं करने का है सहज में हो जाता है सहज शब्द का अर्थ रोजमर्रा भाषा में सहज माने आसान। लेकिन सहज शब्द जहाँ से आया वो 'सह' और 'ज' के साथ मिले हुए सहज से आया। माने आसान है मतलब जो हमारे साथ जो पैदा हुई आँख है, हमारे साथ जो पैदा हुई वो हमारी नाक है, इसका हमें कुछ देखना नहीं पड़ता। इस कारण इसमें कोई भी प्रतिबिम्ब पूरा नहीं पड़ता। अगर कोई ऐसा सरोवर हो कि जिसमें अन्दर कोई भी लहर उठ नहीं रही तो उसके चारों तरफ फैला हुआ उसका सौन्दर्य, पूरा का पूरा अन्दर प्रतिबिम्बित होता है इतना ही नहीं सब पूरा तादात्म्य होता है, इसी तरह से जब आप किसी भी सुन्दर दृश्य को देखेंगे, परमात्मा की रचना को ओर दृष्टि करेंगे आप निर्विचार हो जाएंगे निर्विचार होते ही उसके अन्दर की जो आनन्द-शक्ति है वो आपके अन्दर पूरी प्रतिबिम्बित होगी इतना ही नहीं आप ने उसमें पूरी तरह से तादात्म्य पा लिया है। इसी तरह से अनेक विधि परमात्मा ने आपके लिए शृंगार सजाए हैं, अत्यन्त सौन्दर्य चारों तरफ फैला हुआ है। उस सौन्दर्य के सूत्र में उतरने से ही आपके अन्दर आनन्द की उत्पत्ति हो जाती है। इस आनन्द को आप देखने के लिए ही पैदा हुए हैं, अपने को बेकार में दुखी बनाने के लिए नहीं।

इस तरह से बहुत से लोगों ने पूछा है हमें अब आगे क्या करना है। अब क्या करना होगा सिर्फ देखना होगा। जब आप सिनेमा देखने जाते हैं एक दर्शक की दृष्टि से तो आप सोचते हैं कि हमें क्या करना है, देखना ही है, देखते ही रहना है, आवागमन देखना है, पेड़ों का बढ़ना देखना है, चिड़ियों का चहचहाना देखना है। हरेक चीज की मंगल प्रवित्रपूर्ण मधुर मुस्कान हर चीज में लहलहाती

परमेश्वर की आशीर्वाद की वाणी को सुनना है और कुछ भी नहीं करना है। बस यहीं तक देखते देखते आप अपने में ही विभोर हो जाएँ। अब सिर्फ देखने का होता है कुछ करने का सवाल ही नहीं उठता। शरीर के स्वास्थ्य के लिए भी आपको अब बहुत कुछ नहीं करना जैसे कि आज तक आप बहुत से योग-आसन आदि करते हों तो बहुत योगासन आदि करने की जरूरत नहीं, एक आध हल्का योगासन करें तो कोई हर्ज नहीं लेकिन अधिकतर अपने शरीर का बहुत ख्याल रखें, इसी शरीर में उस परमात्मा का वास है, इसकी इज्जत, इसके साथ कोई भी ज्यादाती करने की जरूरत नहीं। हाँ शराब आदि चीजों से गर आप अपना छुटकारा करना चाहते हैं तो बहुत आसान है। अब आप कोई भी चीज का निश्चय कर लें वो काम हो जाएगा।

आपमें conditioning नहीं आएगी, गर आपने तय कर लिया है कि हमने शराब नहीं पीना है तो छूट जाएगी शराब। शराब इन्सान इसलिए पीता है कि अपने से भागना चाहता है, एक शराब के सिवाय और कोई भी चीज ऐसी नहीं जिसके लिए मैं मना कर रही हूँ। लेकिन शराब जरूर ऐसी चीज है क्योंकि वो आपकी चेतना को खराब कर देती है। शराब को ओर देखते साथ शराब छूट जाती है क्योंकि आप स्वयं को इतना प्यार करने लगे हैं, अपने आप इतना मजा आ जाएगा। गर आपमें से किसी को जेल हो जाए तो आप कहेंगे कि वाह भई यह तो बड़ा अच्छा हुआ वहाँ बैठकर ध्यान करेंगे। मनुष्य अपनी ही मौज में ऐसा रहेगा कि उसको फिर शराब-वराब की वो कहाँ, सिगरेट भी अपने आप छूट जाती है कुछ कहने की जरूरत नहीं। अपने आप ही सब कुछ छूट जाता है। हमारे यहाँ तो बम्बई में ये हालत है कि माचिस नहीं तो

अपने घर से ले जानी पड़ती है धूपबत्ती जलाने के लिए, कोई भी सिगरेट नहीं पीता। बड़े-बड़े सिगरेट पीने वाले पता नहीं कैसे सिगरेट छोड़ दी! कुछ लोग तो रम्मी खेलते थे वो कहते हैं कि वो रम्मी हमारी छूट गई। उसमें मजा आ गया, ज़िन्दगी में मजा आएगा, इन्सान में मजा आएगा, उनके problems में भी मजा आएगा, उनके साथ जूझने में मजा आएगा। अब आप इन्सान के साथ एक होना चाहिए। अब ये भी ख्याल रखना चाहिए अब हमें जूझना नहीं है। अब वो नहीं रहे जो पहले थे, एकदम बदल गए। अब दूसरे हमारे साथ बदले नहीं, इनकी ओर देखना है। उसमें घबराने की कोई बात नहीं क्योंकि आप भी तो वैसे ही थे। बहुत से लोग सोचते हैं कि हम बड़ी भारी position के हैं, बड़ी उनकी position खोपड़ी पर चढ़ी है। कोई सोचते हैं हम पैसे वाले हैं, कोई सोचते हैं बड़े भारी धार्मिक आदमी हैं। सोचने दीजिए। सब पागल हैं, उनकी तरफ देखिए ही नहीं। सब पागलखाने में अपने को बहुत अक्लमंद समझते हैं। जब उस पागलखाने में आप थे आप भी यही सोचा करते थे। वो सब पागलपन की बातें हैं। एक दम से जो सारी मिथ्या चीजें हैं धीरे-धीरे छूट जाएंगी। जब आप जान जाएंगे कि सत्य क्या है। अब आपके अन्दर वो शक्ति आ गई। अब आपमें ऐसी शक्ति आ गई जिसके कारण आप कोई सी भी बात सोचेंगे, उस सोच विचार का आप पर असर नहीं आता। जैसे कि कोई आदमी कहे कि मुझे गुस्सा नहीं करना तो बड़े अपने से पूछो अरे पागल ज़रा गुस्सा तो करो। आप शीशं के सामने खड़े होकर अपने को कहो ज़रा गुस्सा तो करो। हँसी आएगी। जब भी आप गुस्सा करिएगा अन्दर से हँसते ही रहिएगा आपको पूरी समय हँसी ही आती है। गुस्से में आप लपटिएगा नहीं। लपट जाते हैं, किसी भी चीज़ में आप लपट नहीं सकते। सभी चीज़ काम, क्रोध

, मद, मत्सर आदि सब चीज़ें जो हैं इस विषय की एक अपनी एक खेल है, उसे आप देखिए। उसका एक खेल है उसे आप देखते रहिए। आप दूर रहें आप दूर से इसे देखते रहें। क्योंकि आप पहले बाहर थे, वो नहीं रहे और अब आप अन्दर हैं। सहज में यही करना है कि अपने को अन्दर रखना है बाहर नहीं। दूसरों से बात करते वक्त अन्दर रहें, माने निर्विचार। किसी से भी बात करें, किसी से भी कुछ कहना हो तो पहले निर्विचार हो जाएं। निर्विचार होते ही आप उनके अन्दर उतर जाते हैं। फौरन उनका भी रंग बदल जाएगा और आपका तो बदला हुआ है ही। गर आप भी बाहर से वैसे आ जाएं तो हो सकता है आपको वो पनपा दे। अभी आप अन्दर बाहर हो सकते हैं क्योंकि वजह यह है कि अभी अभी कहीं अन्दर आप पहुँचे हैं, जैसे कि आप traffic में से गुज़र कर आ रहे हैं और आपको पहाड़ी पर बिठा दिया है, लेकिन आपको traffic की आदत हो गई है तो आपका ख्याल बनता है अरे मैं तो traffic में हूँ। फिर आप देखिए कि मैं कहाँ खड़ा हूँ, पता हो जाएगा कि आप कहाँ खड़े हैं। यही Self Realization है। पहली जो चीज़ है कि संसार का सारा सौन्दर्य आपमें तादात्म्य है। आप जानिए, यह नई चीज़ है। पर बड़ी अद्भुत, विश्वसनीय, कोई विश्वास ही नहीं करता है पर है बात, ऐसा ही कुछ है। आपको खुद ही लगने लगा कि आप साक्षी हैं। घर में कोई बीमार पड़ जाए, अब सारा घर दौड़ेगा, आफत करेगा। कोई झूठ, कोई सच, कुछ नहीं, कुछ करने की ज़रूरत नहीं। आप अपने को देखिए, आपको बराबर सूझेगा कि आपको क्या करना है। आपको जो मन में आए वो करिए आपके मन में आए सर पर हाथ रखिए, सर पर हाथ रखिए पैर पकड़ने का मन है, पैर पकड़िए। जो भी आपके मन में आ रहा है सबके लिए आ रहा है, उसको आप करें।



दूसरी चीज है सत्य। सत्य बोलें या झूठ बोलें। झूठ क्या है, सत्य क्या है? बहुत सा सत्य जो होता है मनुष्य का बनाया हुआ होता है। मनुष्य का बनाया हुआ सत्य कोई सत्य नहीं है। बहुत बार बहुत सा जो झूठ दिखाई देता है वो महासत्य होता है, इसलिए उसका निर्णय आप मत कीजिए। आप सिर्फ बोलिए। आप अपनी निर्विचारिता पर बोलें। आप अपनी स्थिति पर बोलें। लोगों से डंके की चोट पर कहना पड़ेगा कि हाँ यह ठीक है, यही सत्य है, यही होना चाहिए इसमें डरने की कोई बात नहीं। दिखने के लिए शायद वो लोगों को झूठ लगे, लोग आप पर हँस भी सकते हैं। हम पूना में गए थे वहाँ कुछ ऐसे महामूर्ख लोग थे उन्होंने पेपर में कहीं निकाला कि ये लोग तो हाथ को ऐसे-ऐसे श्रीमाताजी कर रही थीं तो वो सबको मिसमराइज कर रही हैं। उनसे एक साहब ने सवाल पूछा, वहाँ पर कि उनको क्या जरूरत पड़ी मिसमराइज करने की? क्या उनको कोई धंधा नहीं? कहने लगे हम तो मिसमराइज हो नहीं सकते, कहने लगे आप हो ही नहीं सकते। उनके तरह का मिसमराइज होना पड़ेगा। इतने तरह-तरह के लोग हैं दुनिया में जिनको समझ नहीं है। क्योंकि आपके अन्दर ये चैतन्य आ गया, आपके अन्दर ये बह रहा है, आपने इसे देखा हुआ है, इसकी पुष्टि की आपको जरूरत है, लेकिन आपने तेजस्विता नहीं पाई। यही आपमें और बड़े-बड़े साधु सन्तों में यही अन्तर है। आपने वो तेजस्विता अभी पाई नहीं जो प्रखर होती है, जो अपनी शक्ति पर अटूट खड़ी रहती है, जो डरती नहीं, ये कहने के लिए कि यही सत्य है बाकी सब असत्य है और मिथ्या है। वो क्राइस्ट जैसे आदमी के अन्दर, वो कृष्ण के अन्दर और बहुत बड़े-बड़े सन्त साधुओं में ये चीज पाई जाती है। वो आप आदिशंकराचार्य में पाएँ। इसकी पुष्टि के लिए आप उनकी किताबें पढ़िए। अब नए सिरे से आप पढ़िए, अब

नए सिरे से आप गीता पढ़ें, नए सिरे से आप बाइबल पढ़ें, उसमें आप देखिएगा कि हरेक बात की पुष्टि देने वाली चीजें उसमें हैं। लेकिन आप स्वयं पुष्ट हैं आपको कोई जरूरत नहीं कि कोई आपको support करता रहे, सहारा दे। आप स्वयं अपने सहारे पर खड़े होना जैसे ही शुरू कर देंगे एक दम प्रकाशवान हो जाएंगे। इसमें कोई शर्माने की बात नहीं, इसमें कुछ धबराने की बात नहीं। हमारे यहाँ ऐसे लोग देखे जाते हैं जो एकमेव घर के अन्दर एक आदमी होता है वो फिर किसी से बात कहता नहीं, अन्दर छिपा के रखता है। बाइबल में कहा जाता है कि दिया नीचे नहीं रखा जाता, टेबल के नीचे नहीं दिया रखा जाता है, किसी ऊँचे स्थान पर दिया रखना चाहिए। गर आप वाकई दीपक हो गए हैं तो ऊँचे स्थान पर बैठकर के सबको प्रकाश दें, सब धर्मों का प्रकाश यही है। आप चाहे किसी भी धर्म में हों, आप उठा के देख लीजिए। आप सिक्खों के धर्म को मानते हैं आप उठाकर देख लीजिए, अगर ये कहीं पर भी ये बात न लिखी हो, गर झूठ बात कही है-आप किसी भी धर्म की किताब देख लीजिए।

आपकी पुष्टि के लिए बड़े-बड़े लोगों ने लिख रखा है। आप श्लोक के श्लोक कह सकते हैं, आप कुरान की आयात की आयात कह सकते हैं। इसी चीज की गवाही देते हैं चाहे उसे यहाँ पर हम लोग, जिसे spiritual कहते हैं अंग्रेजी में, जिसको हम लोग आध्यात्मिक कहते हैं संस्कृत में, और जिसे वो लोग रूहानी कहते हैं। नाम बदल देने से जो सत्य है वो एक ही है। और सबको ये मालूम है आप लोगों को कि सत्य क्या है। तो सत्य की भी कोई व्याख्या तो हो नहीं सकती। सागर की क्या व्याख्या है? लेकिन क्षण-क्षण में आप देखेंगे कि सत्य ये है, मिथ्या ये है, सत्य ये है, मिथ्या ये है। आपको vibration से आप जानेंगे। वाइब्रेशन से

इसे, आप तोल पाइएगा इससे आप समझ पाइएगा, जहाँ vibration आ रहे हैं वही पर सत्य है। आप पत्थर में भी, मिट्टी में भी, हरेक में आप vibration देखेंगे। कोई गर आदमी है उसके चार-पाँच चक्र पकड़े हैं उससे उलझने की कोई जरूरत नहीं है। कठिन आदमी है, आपके बस का नहीं। आपको फौरन आपके हाथ पर गर्म-गर्म आ जाएगा। भागिए वहाँ से कुछ दिनों के लिए, बाद में वो भागेगा। वो खुद ही जलेगा। जिससे भी आपको गर्म-गर्म vibrations आए, छोड़ दीजिए। ये अपनी बात नहीं; ये रूहानी बात है। यहाँ पर कोई नहीं, अंधेरा है। रोशनी और अंधेरे का युद्ध पूरी समय चल रहा है। आपके दीप इतने सारे जल गए, सारा ही वातावरण बदल सकता है गर कुछ दीप और जल जाएं। इसलिए अपने दीप को जलाकर रखना चाहिए, अपनी vibrations को हमेशा तोलते रहना चाहिए। हमारे फोटो से vibrations हर समय आती है, उसके कभी रुकते नहीं। आप हमारे फोटो की ओर अपना हाथ किया करिए। गर आपके किसी भी उंगली पर देखा कि जिस जगह भी आपको vibrations जलते हुए नजर आ रहे हैं उन सब चीजों का अर्थ होता है। जैसे आप जानते हैं ये मणिपुर चक्र है और ये आपका विशुद्धि चक्र है और ये आपका आज्ञा चक्र है, ये आपका स्वाधिष्ठान चक्र है और ये आपका मूलाधार चक्र है, और बीचों-बीच यहाँ पर आपके हाथ के बीचों-बीच सहस्रार है, पूरा गोल। किसी के भी, किसी ने आकर आपको बता दिया कि फलाने की तबियत खराब है, हम चाहते हैं कि आप उसके लिए प्रार्थना करें। कुछ करने की जरूरत नहीं। जो चक्र उनका खराब हो उसको आप यूँ करके धो लीजिए उनको बहुत फायदा हो जाएगा।

यहीं बैठे आपकी उंगलियों के इशारे पर सब चीज चलने वाली है। आपके attention पर दिव्यत्व है, मैंने

आज सवेरे बताया था, इसका आप पड़ताला लीजिए। पाँव में पूरे चक्र बने हैं। मनुष्य बहुत बड़ी चीज है, बहुत बड़ी चीज है। ऐसे हजारों उसके सामने यंत्र फैंक दिए जाएं, उसका यंत्र परमात्मा ने इतना सुन्दर बनाया है। बस उसकी बिजली चमकाने की बात है। वो भी चमक गई, अब क्या रह गया? रह यही गया कि बहुत कुछ है लेकिन अब दीप लेकर सब जुट जाना होगा और देखना होगा क्या है। क्योंकि बहुत कुछ है। थोड़ा सा एक दिया जला दिया और उसको लेकर बैठे हैं! बैठने की बात नहीं और आप देखिएगा कहाँ तो दूसरों के मन में, दूसरों के अंतस में, दूसरों के अंतस में जब आप देखिएगा तब आप जानिएगा कि क्या है। इसलिए यहाँ पर एक organisation की भी बात सोची गई है। हमारे एक अनन्त जीवन नाम की संस्था है, बम्बई में चली है। इसमें हम कोई Membership नहीं रखते हैं, जो realized होगा वो member है, realized लोग भी थोड़े से वो ढलक जाते हैं। फिर से realized होते हैं, कुछ आते हैं ऊपर से फिर सड़क जाते हैं। ऐसे आपमें भी आधे अधूरे कुछ होंगे, कुछ पूरे होंगे, बिल्कुल चलेंगे। पीछे हमने बॉस साहब से request किया था, आप उन्हीं को chairman बना लीजिए जैसा भी करना चाहें कर लीजिए, उनके पास हम ठहरेंगे और आपका घर भी, आपका पता यहाँ भी पास ही है। वो क्या है? 10 नंबर, किंग जार्ज एवेन्यू, ये आपका घर है, और फोन नंबर भी आपसे ले लीजिए। उनके पास हम फोटो वगैरा सब भेज देंगे, लेकिन आप बहुत बड़े काम में व्यस्त रहते हैं, समय पर आप लोग आ जाइएगा और आपको शुक्रवार का दिवस बहुत अच्छा है। उस दिन आप लोग अपना meditation का कार्यक्रम रखें। हम वहीं से चित्त से आपको देख रहे हैं। परमात्मा के बहुत से प्रतीक रूप आपने सुने होंगे जैसे गणेश जी हैं, उनके मूषक वाहन



हैं और सबके वाहन आपने सुने हैं। आपका वाहन सिर्फ चित्त है, आप चित्तरूढ़, चित्त पे रहें। क्या कमाल है आपकी? आप चित्त पर अपने बैठे हुए हैं, जहाँ चित्त जाए वहीं काम बन जाए। और इसकी इतनी कमाल है, यहाँ बैठे-बैठे आप अपनी सत्ता निकालिए। यूँ करके ठीक कीजिए सब।

जिसको भी देखा है कि वो सूता रहा है, परेशान कर रहा है, किसी भी आदमी जिसके लिए भी आप सोचते हैं अपने सहस्रार पर ला करके उसको ठीक कीजिए। बीच में ब्रह्मन्त्र है, आपको आश्चर्य होगा कि उनकी काफी हालत ठीक हो गयी। बहुत दुष्ट, महादुष्ट जो अभी इन्होंने गाया था कि दुःशासन बैठे हैं और सन्त बैठे हैं, बिल्कुल बैठे हैं। सबके ऊपर में हम लोग बैठे-बैठे सवरे यही धन्धा करते रहते हैं कि उनको सुबुद्धि दो। इस तरह से ये प्यार का चक्कर है, बैठे-बैठे यहाँ से प्यार का चक्कर घुमाने से उधर आदमी ठीक हो जाता है क्योंकि नफरत से कितनी ज्यादा शक्तिशाली है प्यार की बात। बहुत शक्तिशाली है, समुद्र की जैसे थाह होती है। समुद्र कितना बढ़ जाए उसकी थाह बढ़ती ही रहती है। ऐसी है! कितनी भी नफरत बढ़ जाए संसार की और प्यार जो है उससे भी ज्यादा बढ़ते रहेगा और नहीं बढ़ेगा तो संसार नष्ट हो जाएगा। आप अपनी जिम्मेदारी को अभी समझ नहीं पाए कि एक नया जमाना जमाने की बात है। नए लोग, नया Dimension, एक नया आयाम जिसको आप समझ सकते हैं, सिर्फ vibrations से आप समझ सकते हैं। कोई और नहीं समझ सकता। अभी जो सिद्धेश्वरी बाई गा रहीं थी उनकी हालत खराब थी, कल इतनी खराब थी कि घबरा-घबरा कर मेरे पास पहुँची। Operation करना है और ये करना है, वो करना है, ऐसा है, वैसा है। हमने हाथ रखा और आज वो गाने लग गई। आप लोग सब ये काम कर सकते हैं। कोई ऐसा मैंने

छोड़ा नहीं काम जो आप कर नहीं सकते। अब बस ये है कि हमारे बीच में बड़ा परदा है, इस परदे को चाक करना आ जाए, काम बन जाएगा। इस पर्दे का ही चाक होना मुश्किल हो जाता है। बहरहाल आप पार हो गए तो पहले अपना तो परदा चाक हो जाए। अब हमारा और आपका बीच का अन्तर जितने जल्दी छूट जाए उतना ही काम बड़ा जबरदस्त है। इस चीज़ में अन्त में जो सबसे बड़ी बात है वो है प्रेम। हमें प्रेम के साथ तादात्म्य करना है। जब हम किसी के साथ बात करते हैं तो हम पहले ही सोच लेते हैं कि इसे प्रेम ही करें। ये सारा ही प्रेम है इसमें आप कुछ गड़बड़ कर ही नहीं सकते। जैसे लोग हमसे कहते हैं कि आप हरेक को देखो तो Realization दे रहा है। अमेरिका में खासकर लोगों को बड़ी परेशानी है, कि लोग उसको बुरी चीज़ के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं। मैंने कहा क्या बुरा करेंगे? किसी की जागृति करेंगे, किसी को पार ही करेंगे या किसी को ठीक करेंगे। प्यार से आप किसी का बुरा कर ही नहीं सकते। आप ही सोचिए जिस आदमी को आप प्यार करते हैं आप उसका बुरा कभी कर सकते हैं? प्यार की पहचान ही ये है कि वो कभी किसी का अहित सोच ही नहीं सकता। जो कुछ भी होगा वो हितकारी होगा, वो जाएगा कहाँ? हित ही होगा।

बस अपनी इज्जत खुद ही करनी होगी। बस अगर अपनी जैसे जैसे इज्जत करनी शुरू कर दी वैसे-वैसे आपकी स्थापना अन्दर हो गई। क्योंकि ये मन्दिर है और इस मन्दिर की जितनी भी आपने इज्जत करी हुई है उतना ही उसके अन्दर परमात्मा का प्रकाश है। आप प्रेम से तादात्म्य पा सकते हैं। एकदम आप प्रेम से एकाकार हो सकते हैं, बिल्कुल एक स्वरूप हो सकते हैं। आपके अन्दर से शुद्ध प्रेम ही बह सकता है जो स्वयं सत्तात् चैतन्य है, वही सत्य भी है, वही सौन्दर्य भी। इस सबके

साथ एकाकार आप एकदम हो सकते हैं। निर्विचारिता में आप बैठें। लेकिन निर्विचारिता तभी आती है जबकि आप इसको यहाँ से तो निकल गए हैं, यहाँ पर आ गए हैं। इस दशा में आप खड़े हैं कि आप निर्विचार हैं। आपका Brain था वो सोचता था, अब Brain से आपको निकालकर के सहस्रार तोड़कर के आपको यहाँ ले आए हैं। अब यहाँ आप जब पहुँच जाइए, इस जगह पर आप हाथ रखकर देख सकते हैं, जो Realized हैं देखिए। आपको लगेगा इस जगह अर्धबिन्दु में, जो लोग Realized हैं उनको महसूस होगा, जो लोग Realized नहीं हैं उनको महसूस नहीं होगा। लग रहा है? धीरे-धीरे ऊपर नीचे करें, ऊपर नीचे करें। जरा नीचे, इससे ऊपर में अर्धबिन्दु की दशा है, उससे ऊपर में बिन्दु हैं, उसके ऊपर में वलय है। सब कुछ जो भी सृष्टि करने में बनाया गया था वो सब कुछ मनुष्य के अन्दर में बना दिया। पहले वलय, उसके बाद बिन्दु, इसके बाद अर्धबिन्दु उसके बाद में ये। फिर सारी कुण्डलिनी की रचना। पूरी कुण्डलिनी को बना दिया है और वो जो आदि कुण्डलिनी है वो ही आपके अन्दर में लपक करके आ गई और आपकी कुण्डलिनी बन गई। आदि कुण्डलिनी बनाने के लिए पहले कुछ लोगों को बिठाया गया था, शुरुआत करने के लिए किसी को बिठाना पड़ता है। पहले उन्होंने गणेश जी को बिठाया। आदिशक्ति ने सिर्फ एक चक्र के साथ श्री गणेश जी को बिठाया, एक गणेश, एक ही चक्र के साथ श्री गणेश ।

गणेश जी क्या हैं? सिर्फ पावित्र्य, सिर्फ पावित्र्य। आप इसी को सोचिए हमारे शरीर के ऊपर कुछ दिनों तक यदि आप नहाए धोए नहीं और मैल है। आप सोच लीजिए यहाँ पर भी vibrations है और यहाँ भी vibrations हैं, और उसको निकालकर के हम इकट्ठा कर दें तो जो जड़ तत्व जो है उसके अन्दर vibrations

ही vibrations होगा। माने सिर्फ पवित्रता के बिल्कुल पुँज हैं। क्योंकि He is an eternal child, अनन्त के बालक हैं। उनके जैसा बालक संसार में मिलना मुश्किल है। सिर्फ पावित्र्य ही पावित्र्य है, उनका सारा प्यार ही पवित्रता है और उस पावित्र्य की वजह से आपके मूलाधार चक्र पर, चक्र पर, मूलाधार पर तो माँ बैठी हुई हैं, उनको बिठाया है। इसका मतलब ये है कि sex के मामले में आपको एक छोटे से बच्चे जैसा होना होगा। इसका अर्थ ये नहीं कि sex का life में कोई स्थान नहीं।

इसका अर्थ ये है कि sex के मामले में जब आप धर्म में उतरते हैं उस वक्त अपने sex के प्रति विचार जैसे बालक के अबोध होते हैं वैसे होने चाहिए। इसका अर्थ ये है। गणेश तक पहुँचना बहुत कठिन बात है, बहुत कठिन बात है क्योंकि बड़ी पवित्र आत्मा हैं। और उनका प्रकाश चारों तरफ फैल रहा है। उसके अन्दर जाने के लिए हमें बहुत ही स्वच्छ होना पड़ता है तभी हम उसके अन्दर उतरते हैं। नहीं तो वो और उनकी माँ के सिवाय वहाँ कोई बैठता नहीं।

उसके बाद दूसरा चक्र लेकर के वो जब आए तब उन्होंने ब्रह्मदेव की रचना करी, किन्तु वो उन्होंने करी उल्टे ढंग से। पहले उन्होंने श्री विष्णु को पैदा किया। उसकी वजह ये कि पहले, creation करने से पहले ही एक पालनकर्ता पहले ही बना दिया। इसलिए नाभि चक्र से हमें भी अपनी माँ से ही पहले पैदा किया जाता है। और फिर इस पिता स्वरूप बाप को बनाने के बाद क्योंकि पहले बाप बना दिया उन्होंने और उसके बाद उनकी नाभि से श्री ब्रह्मदेव की रचना हुई। बिल्कुल हुआ, ऐसे ही हुआ जैसे खूँटे बिठाए जाते हैं, इसी तरह से हुआ। इसमें झूठ कुछ नहीं, आप खुद देख सकते हैं ये बात। अब भवसागर बन गया, भवसागर की तैयारी हो



गयी, सारा void तैयार हो गया, Vagus Nerve और Aortic Plexus चारों तरफ भवसागर के, उसके अन्दर से बहने वाला प्यार, creation उसी में फैस गई। प्यार चारों तरफ से लिपटा हुआ है। All pervading power है प्यार, और उसके बीच में creation है। अब इस भवसागर को लौघने की बहुत जरूरत है। लेकिन सबसे पहले दिन जो मैंने आपसे बताया था, जो ईश्वर और उनकी शक्ति, जो ईश्वर है वो हमारे हृदय में आत्मास्वरूप बैठे हैं। इसलिए जैसे ही बच्चा जन्मता है, जन्मता नहीं जब माँ के उदर में ही होता है तभी साक्षीस्वरूप ईश्वर उनके हृदय में आ जाते हैं और एक flame, जैसे अंगूठा है एक flame, के जैसे दिखाई देते हैं। ये left hand side हृदय में हैं। बहुत लोग confusion में डाल देते हैं कि हृदय चक्र में हैं, हृदय चक्र में नहीं वो हृदय में हैं। आत्मा स्वरूप एक flame जैसे रहते हैं। उसकी वजह है, हृदय चक्र में क्यों नहीं क्योंकि वह कुण्डलिनी के जाने का मार्ग है, हृदय चक्र, जो बीचों बीच है और ये एक तरफ left में रहते हैं। राम शब्द रा- माने energy और म माने, महेश, जो ईश्वर अपने हृदय में बैठे हैं। रा जब म से मिल जाता है तभी राम हो जाता है। इसे भवसागर में फँसे लोगों को बाहर निकालने के लिए कोई न कोई व्यवस्था करनी पड़ी। इसलिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये बड़ी अजीब सी हस्ती बनाई है। इन तीनों की धर्म पर स्थापना कर दी गई, दत्तात्रेय ने और यही आदि गुरु और हमेशा गुरुरूप रहे हैं। इन्होंने अनेक बार संसार में जन्म लिया। उनका जन्म राजा जनक के रूप में हुआ जो आदिशक्ति के पिता स्वरूप थे। उसके बाद उनका जन्म ईरान में हुआ था जोरास्टर के रूप में, मच्छिंद्रनाथ भी वही, मोहम्मद साहब भी वही, नानक साहब भी वही। किसका झगड़ा किसके साथ लगा हुआ है? सोचिए।

कैसे अन्धकार में आप हैं? मोहम्मद साहब की जो लड़की थी फातिमा, वो वही थी जो कि जनक की लड़की थी। किससे झगड़ा कर रहे हो ये सोचो तो। और नानक की जो नानकी थी वो वही थी जो जानकी है। उसके बाद हमारे शिरडी के साई बाबा, वो भी आदि गुरु थे, सबके ही गुरु हैं, मेरे भी यही गुरु हैं। आदि गुरु हैं इन्होंने ही मुझे सब धन्धा सिखाया, जन्म जन्मांतर सिखाते रहे। अन्त में मुझ ही को आकर ये काम करना पड़ा। ये उन्होंने भी नहीं किया और इस जन्म में मुझी को वो गुरु स्थान में बिठा रहे हैं कि मैं गुरु बनूँ। अजीब सी हालत है! एक जमाना ऐसा था कि किसी स्त्री को कोई गुरु मानने को तैयार नहीं था। कलियुग में माँ के सिवाय काम नहीं है, पुरुषों के बूते का काम नहीं है। प्रखरता से काम चलने वाला नहीं है, माँ का प्यार ही क्योंकि इतना ज्यादा पहले ही से दबाव और tension संसार में आ गया कि आदमी टूट जाएगा जिस दिन और प्रखरता में उतरेगा, और टूट ही जाएगा। इसलिए प्यार के बगैर कोई इलाज नहीं था। इसलिए हमीं को आज गुरु पद पर आना पड़ा। सब स्वीकार्य है लेकिन हम तो जानते ही नहीं थे गुरु कैसा होता है। गुरु में तो Distance रह जाता है वो माँ में कोई Distance नहीं रहता है। बच्चे माँ की खोपड़ी पर बैठे रहते हैं। इसलिए आप लोग भी देखिएगा हमसे आप बहुत liberty लीजिए और मजा आता है। पूरे freedom से आप हमारे साथ रहिए। न आपको हमारे साथ कोई भय लगेगा न आपको कोई घबराहट होगी। कोई परेशानी नहीं। कोई भी बात हो बेधड़क आकर आप हमसे बताइगा, कोई सा भी problem हो आप हमसे कहिएगा। आप हमसे लड़िएगा, झगड़िएगा सब होगा, जैसे अपनी माँ के साथ, वही होती है जिससे हम बिल्कुल freely बैठे हैं। पूरे freedom की जरूरत थी इसी वजह से। धर्म की चर्चा खुलेआम करने की जरूरत



थी। गुप्त कुछ भी नहीं है, कुछ भी गुप्त नहीं है, एक दशा में जाकर सब उघाड़ कर ही जाना है। पूरा उघाड़ना है, पूरा तत्व उघाड़कर कहने की जो बात है। लेकिन हो गया। हरेक बात हर मौके पर नहीं कही जाती। पूरी ही बात अब हम आप लोगों से कह रहे हैं ये हम Realized लोगों से कह रहे हैं जो non-realized हैं उनके लिए शंका ही है। जो realized लोग हैं उनके लिए कुछ इसका मतलब है पर इससे भी ऊँची दशा पर पहुँचने पर आप साक्षात् हो जाते हैं। उसके बाद भवसागर को पार करने के लिए जो गुरु की स्थापना हुई उस पर भी बहुत कुछ काम किया गया कि गुरु किसी तरह से इस भवसागर से मनुष्य को पार कर देगा। कुछ काम बने कुछ नहीं बने, बहुत से लोग हो गए। वो ही आज मदद कर रहे हैं वो चिरंजीव हैं। जैसे कि जैन धर्म में बहुत से चिरंजीव हैं, जैन धर्म के संस्थापक महावीर और बुद्ध की माँ एक थी और आदिशक्ति के ही पेट से दोनों पैदा हुए। इसलिए उनका पहला ही रिश्ता आप समझ लीजिए कि वो कहाँ पैदा हुए और फिर कितने बार फिर पैदा हुए। लेकिन सब के लिए ही experimental था, सबने ही experiment किए, कभी इस दशा में कभी उस दशा में, कभी इस तरफ ले जाकर कि किसी तरह से मनुष्य भवसागर से पार हो जाए। थोड़े बहुत हो जाते थे, चिरंजीव हो जाते थे लेकिन amass जिसे कहना चाहिए इतने लोगों को पार करना कलियुग में ही हो सकता है।

इसके बाद रामचन्द्र जी संसार में आए, वो भी इसीलिए वो बिल्कुल ही मानव हो गए थे, एकदम मानव हो गए थे, उनको तो भुला दिया गया था कि तुम अवतार हो। वो एक दम ही अपने को भुलाकर के आप इस माया में पड़कर एक दम ही अपने को भुला करके आए और मानव ही बनकर इस संसार में वो जिए हैं इस भवसागर

से आपको निकालने के लिए। पूर्णतया वो मानव थे। यहाँ तक बाहरी features में आप देखिए तो वो पूर्णतया मानव थे कि मनुष्य उनको जाने। उस वक्त भी दो चार लोग थे वो पार हो गए इसमें कोई शक नहीं लेकिन बहुत ज्यादा नहीं हो पाए।

उसके बाद छः सात हजार साल पहले श्री कृष्ण आए। शिवजी तो आप जानते हैं उनके साथ-साथ हैं ही। लेकिन श्रीकृष्ण के आने से पहले आदिकाल से ही जब भवसागर से लोग पार होना चाहते थे तब उन भक्तों को बड़ी आफत आती थी, वो जब भी meditation में बैठते थे उनको सताया जाता था। तब आदिशक्ति अपने सम्पूर्ण रूप में प्रकट हुई और उन्होंने 108 बार अवतार लिया। इसको आप जानते ही होंगे। देवी महात्मय आप पढ़ें, मेरी बात आप समझ जायेंगे। देवी रूप वो संसार में आई और उन्होंने आकर के लोगों को पहचाना। लेकिन तब वो सिर्फ देवी स्वरूप आई थीं, उनको कोई माया बीच में नहीं थी। इस वजह से मनुष्य तारण नहीं पा सकता, उनकी सिर्फ Protection ही जिसे कहना चाहिए बचाव ही हो सकता है लेकिन तारण नहीं हो सकता। महिषासुर को मारा, शुम्भ-निशुम्भ को मारा बहुतों को मारा।

जो राक्षस सताते थे, जो Negative लोग थे, जो सताते थे भक्तों को उनको सबको मारा। लेकिन उनसे उनका तारण नहीं हुआ क्योंकि वो पूर्णतया Human नहीं थे। जितने चक्र थे, तो चार चक्र पर हृदय चक्र आता है, इसलिए उनके सामने चार ही पड़ते थे। इसलिए राधा का जन्म हुआ सीताजी के बाद श्री राधा का जन्म हुआ। जो बहुत ही Human, विशुद्धि चक्र पर पाँचवें चक्र पर उनका स्थान है। बहुत ही Human और प्रेम का संगीत उन्होंने गाया। कहते हैं कि जब कंस को मारा था श्री कृष्ण ने, अपना मामा था, तब भी राधा जी को

बुला कर लाए थे। राधा 'रा' माने फिर वही energy 'ध' 'रा' माने धारने वाली। राधा ही की धारा हो जाती है आपके अन्दर। जो शैवाइट लोग हैं वो शिवजी को मानते हैं, वो भी एक दिन अकृष्ण थे। कृष्ण और शिव में कोई अन्तर नहीं सिवाय इसके कि शिव जो हैं ईश्वर स्थिति में अपने हृदय में स्थान बनाए हैं, और श्री कृष्ण विशुद्धि चक्र में, उनको 16 कला कहते हैं वैसे अपने अन्दर 16 Plaxuses होते हैं, आश्चर्य की बात है विशुद्धि चक्र जिसकी कि 16 कलाएं हैं वहाँ पर श्रीकृष्ण का वास है। और उनकी शक्ति राधा थी जो बाद में दो में बंट गई जो रुक्मणी और राधा बनकर के एक वृंदावन में और एक द्वारिका में। बहुत ही Human।

उसके बाद श्री कृष्ण का एक ही पुत्र था जो प्रणव स्वरूप था। जरा सोचिए साक्षात् ओम् स्वरूप वो था। उसने यहाँ अवतार लिया। उसका नाम जीसस क्राइस्ट है और उसकी 'मेरी' माँ थी आज्ञा चक्र पर वो आए। आज्ञा चक्र पर आते ही वहाँ पर ego और super ego दोनों का सामना होता है। आप देखिए कि आपका आज्ञा चक्र जो है Pineal Body (शंकु रूप) और Pituitary Body (पीयूष ग्रंथी) को control करता है। बिल्कुल Scientific बात है। इसलिए आपके आज्ञा चक्र पर भूत सिर्फ उन्होंने निकाले क्योंकि Superego में भूत बैठते हैं और Ego में भी भूत बैठ सकते हैं क्योंकि ईडा और पिंगला दोनों वहीं-खत्म होते हैं। उसी ने इस पर हाथ रखा। पहले वैसे तो नानक जी के जमाने में भी हुआ था। हर समय ये भूत वाले आते रहते थे। Enticement करते रहते थे। ये होता था लेकिन उनकी तो गर्दन ही काट दी। कृष्ण में तो संहार शक्ति है कमाल की। तो आज्ञा चक्र पर ईसा-मसीह का नाम है। और महालक्ष्मी जिनकी हम इतनी स्तुति गाते हैं, उनको किसी ने कहीं वर्णित नहीं किया कि वहाँ कहाँ हैं, वो स्वयं 'मेरी' हैं। ये जब भी अपने बच्चे के साथ आती

हैं और अपने पति के साथ में आती हैं तब शांत होती हैं, लेकिन जब अकेली आती हैं तब वो भयानक होती हैं। और तब से यहाँ का स्थान साक्षात् भगवती का है। सहस्रार का स्थान साक्षात् भगवती का है। ये स्वयं इसे तोड़कर इसमें सातों चक्र पूरे होते हैं इसीलिए माया भी सात पर्दे की है। और इसकी पहचान मुश्किल बहुत मुश्किल है। पूरा का पूरा उसका Human बिल्कुल Human चक्र पूरा हो जाता है। 'सातों चक्र का।

आपको क्या करना चाहिए किस तरह से अपनी साधना पूरी करनी चाहिए। ये तो मैंने थोड़े में बता दिया। लेकिन Methodically इसे बताया जाए तो इस तरह से समझिए इसका कोई समय तो होता नहीं, हर समय आप निर्विचारिता में रहिए जैसे इस वक्त आप निर्विचार बैठे हैं। जब विचार करिए निर्विचारिता में जाइए। अब इसके बाद में Thoughtless awareness के बाद में Doubtless awareness आती है। अब आपको शंकाएं खड़ी होंगी। इसके बाद Second stage में आदमी Doubtless awareness में आता है। अब शंकाएं होंगी। ये ठीक है या नहीं, माताजी ने ये कहा ये बात ठीक नहीं है। ऐसा कैसे हो सकता है? ये हुआ या नहीं, हम पार हुए कि नहीं? इस तरह की शंकाएं। ये शंका का निर्मूलन ऐसा होगा जब आप अपने स्थान पर आसन्न होंगे। माने कि हमने आपको तो सिंहासन दे दिया लेकिन आपको शंका है कि ये सिंहासन है या नहीं, हम बैठे हैं ये ठीक है या नहीं? तो आप देख लीजिए आप अपने हाथ से देख लीजिए कि कितनी अद्वितीय चीज आपके हाथ से जा रही है और लोगों को जब आप इसी हाथ से छूकर के ठीक करेंगे, आपको जब इनके अनुभव धीरे-धीरे आने लग जाएंगे तो आपके Doubt तब धीरे-धीरे कम होने लग जाएंगे। माने ये कि हमने आपकी नाव बना दी तैयार कर दी, अब तैयार होने के बाद इसको, नाव को,



पानी में छोड़ना चाहिए लहरों से लड़ना चाहिए, तब पता होगा कि ये नाव है या नहीं। हो सकता है लकड़ी ही हो। लेकिन लकड़ी की नाव बन गई कि नहीं, बन गई, ये पानी में गिरे बगैर नहीं पता चलेगा। इसलिए इसको, नाव को छोड़ देना चाहिए और लहरों पर छोड़ना चाहिए और देखना चाहिए। लहरों के थपेड़े जब बैठेंगे और तो भी जब नाव नहीं डूबेगी तो पता हो जाएगा नहीं, हाँ हो गया है, मामला कुछ। अभी तो doubts ही आएंगे थोड़े से, क्योंकि मनुष्य अपने को बहुत ऊँचा समझता है। एक साहब थे हमारे यहाँ, तो वो गए वहाँ एक स्वामी जी बैठे हुए हैं, हजारों आदमी वहाँ आते हैं खाते हैं पीते हैं। वो झण्डा लगाकर वहाँ बैठे हैं। अब ये महाशय हमारे साथ अमेरिका गए हुए थे। ऐसे इशारे पर वो कुछ करते थे। आप भी कर सकते हैं, यूं करिए, किसी-किसी की कुण्डलिनी रास्ते-रास्ते यूं ही उठा सकते हैं, यूं करिए। यूं इशारे पर यहाँ बैठे बैठे ही किसी की कुण्डलिनी चाहे उठा करके आप मज्जा देखिए क्या होता है! आप किसी की भी आप उंगलियों पर आपके कुण्डलिनी घूमेगी। आपके क्या आपके हाथ से जो बह रहा है उसी के सहारे होगा। वो ऐसे तीन-तीन सौ लोगों की अमेरिकन लोगों की कुण्डलिनी उठाते थे वो साधू जी थे वहाँ बहुत से लोग गए। तो ये भी चले गए तो जब गए तो हमें तो सब पता हो ही जाता है कहाँ कौन भटक रहे हैं। जब लौट के आए तो हमने कहा आपने उनके पाँव क्यों छुए? कहने लगे सब छू रहे थे हम ने भी छुए। जो अपने से बड़ा हो उसके पाँव छूने चाहिए। आपने क्यों किया? कहने लगे सब छू रहे थे तो हमने भी छू लिए। हमने कहा उनका हाल क्या था? कुण्डलिनी का क्या हाल है? वो पार हो गए? कहने लगे वो पार तो नहीं हैं और कुण्डलिनी, वो तो ओंधी बैठी है। मैंने कहा तुम्हारे उंगली के इशारे पर हजारों ऐसे उठते हैं और तुम्हें ख्याल नहीं

आया कि इसके मैं क्यों पाँव छूऊँ? कुण्डलिनी ओंधी बैठी हुई है अरे पार तो होता कम से कम, उसके पाँव छूने चाहिए। पाँव उसी के छूने चाहिए जो अपने से ऊँचा हो। आखिर किस चीज़ के लिए? तुम तो सब जानते हो उसका शास्त्र, जानते हो, सब कुछ जानते हो। इतनी तेजस्विता तुममें आ गई तुमने उसके पाँव कैसे छुए? Egolessness ये ही आता है। आप लोग इतने साधारण तरीके से रहिए कि कोई विश्वास नहीं कर सकता कि आप पार हैं। आदमी Egoless हो जाता है। एकदम Egoless। उसको लगता ही रहता है कि ये कैसे हो सकता है। कुछ भी करे उसको लगता है। ऐसे कैसे हो सकता है। लेकिन हो गया है, आपके अन्दर ये बात हुई, अगर हो गई तो ये सोचना चाहिए कि गर हुई है तो हमारे लिए क्यों हुई, इस दिल्ली में हम कितने लोग रहते हैं।

आखिर हमीं क्यों विशेष रूप से पार हुए? कोई न कोई कारण होगा। पूर्व जन्म के, जन्म जन्मांतर की आपकी खोज है, जन्म जन्मांतर का आपका हक है। आप लोग साधु, बड़े-बड़े साधु लोग हैं, आपको क्या पता? आप गर साधु नहीं होते तो क्या आपको हम पार कराते। हम क्या करते गर पत्थर को हम पार कराते। हजारों लोग आते हैं, हम, आपने देखा, नहीं पार करा पाते। आप ही लोग कुछ लोग पार हो गए, कोई न कोई बात तो है ही। लेकिन ये आपके अन्दर आएगी नहीं बात, बैठेगी नहीं, क्योंकि आप अपने को सोचिएगा कि ऐसे कैसे हो सकते हैं? Egoless हैं इस वजह से ये Problem आ जाता है। ये सहजयोग की Egolessness है। बहुत ही साधारण तरीके से। न तो आप कपड़ों में कोई बदल करने वाले हैं, न तो किसी चीज़ में लेकिन अन्दर से आप देखते जाइएगा कि शान्ति आ गयी, अब क्यों उलझ रहे हो? बातचीत में बोलने में हरेक चीज़ से

आप Realized आदमी होंगे कि हाँ यह Realized है। और फिर माहिर, होशियार हो जाएंगे क्योंकि आप जानेंगे कि इनका ये ऐसे ही बोलेंगे, इनका ये घूम रहा है, उनका ये घूम रहा है। वो उधर बक-बक कर रहे हैं ये इधर ऐसे-ऐसे कर रहे हैं, चलो इनको ठण्डा करें। थोड़ी देर में देखा महाशय जी ठण्डे हो गए हैं। कोई लोग आते हैं हमसे झगड़ा वगड़ा करने, ये लोग पीछे से उनकी कुण्डलिनीयाँ घुमा-घुमा कर उनको ठण्डा करते हैं, थोड़ी देर में चुपचाप बैठे। बहुत Tricks करते हैं। एक साहब बहुत झगड़ा कर रहे थे। इतने उनका Time वो बता रहे थे आज एक किस्सा, एक साहब झगड़ा कर रहे थे उनका Time आ गया तिल खाने का। तो अच्छा लाओ देखें तुम्हारी तिल, हाथ में रखकर उसमें Vibrations दे दिया, खाओ। खाते साथ ध्यान में खट से चले गए। किसी ने ज्यादा परेशान किया तो पानी में ज़रा सा हाथ डालकर वाल करके पिला दीजिए पानी, काम खत्म। चैतन्य अन्दर में एकदम से पनप जाएंगे। लेकिन आप सभी अभी आप बच्चे हैं। अभी-अभी आप पैदा हुए हैं तो छोटा बच्चा बड़ी जल्दी बीमार होता है, बड़ी जल्दी आप पकड़ लेते हैं। अपने स्थान से आप बड़ी जल्दी गिर जाएंगे। स्थान को पकड़े रहें, स्थान से हटें नहीं। डावांडोल आदमी को नहीं रहना है। अपने स्थान पर जमे रहें क्योंकि चीज़ ऐसी मिली हुई है कि आदमी डावांडोल हो ही जाएगा। ये आपको मैं बता रही हूँ।

इसीलिए संघ शक्ति होनी चाहिए। ये लोग हैं आपस में आकर के माताजी मेरा सिर पकड़ गया। निकाल दीजिए। आपस में, अरे भई कमर में ही, आज्ञा चक्र में कहीं जहाँ पर भी है वहाँ निकाल दो। आपस में ऐसे ही बातें करते रहते हैं। अब यही आपके सब भाई बहन हैं यही सब प्रेम की एक नई दुनिया है। ये आपके रिश्तेदार हैं इनको सबको आप

जानिए। कोई तकलीफ होगी अचानक आप देखिएगा कि इनमें से कोई आदमी पहुँच जाएगा अचानक। क्योंकि देवता आपके ऊपर मँडराते हैं। एकदम से कोई आदमी सोचे ज़रा देखूँ उनका क्या हाल है? कहने लगे मुझे पता नहीं मैं कैसे चला आया? मैं आ रहा था रास्ते से, मैंने कहा ऊपर जाएँ, चला आया। काम आपका बन गया। एक्सीडेंट आपके होने वाले नहीं, देवता आप पर मंडरा रहे हैं। आपमें से एक भी आदमी गर ऐसी जगह है जहाँ एक्सीडेंट हो रहा है तो सब बच जाएंगे, आपकी वजह से। बहुत-बहुत कुछ होगा। आप देखते रहें, रोज़ लिखते रहें, आपकी कुण्डलिनी की जागरणा, उसका घूमना फिरना देखते रहें। उसमें परेशान होने की कोई बात नहीं। उठेगी, कभी यहाँ गुदगुदी करेगी, कभी यहाँ चढ़ेगी, कभी यहाँ आलौकिक करेगी, कभी यहाँ आलौकिक करेगी। उस सब चीज़ से आपकी जो चेतना है वो बँधी है, वो प्रकाशित होगी और संसार में वो आन्दोलित होगी। अभी यहाँ आप बैठे हुए हैं आपको पता नहीं कि हज़ारों करोड़ों रश्मियाँ आपकी यहाँ बह रही हैं। आप देख लीजिएगा कि दिल्ली का वातावरण बदल जाएगा। देख लीजिए हम एक ही बार कलकत्ते गए थे कलकत्ते का वातावरण देखा आपने कैसा है? तभी हमने कहा था कलकत्ते का वातावरण बदल जाएगा। आठ दिन कलकत्ते में रहे, वातावरण बदल गया। लोगों के दिमाग ज़रा ठण्डा हो गया। आज महाराष्ट्र में सबसे अच्छा चल रहा है। वजह है इसकी। कितने ही लोग Realized हो गए महाराष्ट्र के, अब दिल्ली स्टेट को जाना है। और सारे संसार की कुण्डलिनी भारत-वर्ष में बैठी हुई है वो भी देख लीजिए, क्या कमाल है? भारतवर्ष में ही सारे विश्व की कुण्डलिनी बैठी हुई है और भारत वर्ष हमारा ठीक हो जाए सारा संसार ही ठीक हो जाए। और उसका सहस्रार भी यहीं बैठा हुआ है और इसलिए मुझे हज़ारों हिन्दुस्तानी ऐसे चाहिए जो Realization दे पायें।



# ENGLISH TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from Divine Cool Breeze

You have to do nothing at all. In Sahaja Yoga everything gets done. In day to day language the meaning of word Sahaja is 'easy'. The origin of this word is from 'Sah' and 'Ja'. These two letters make the word Sahja-meaning 'easy' and that is 'born with us.' The way our eyes are born with us, nose is born with us. We don't have to think about it.

There is no perfect image of it. The all round beauty of a rippleless lake fully reflects within us. Not only this, but also establishes complete harmony in the person who looks at it. Similarly, when you look at some beautiful sight and the beauty of the Divine creation, you will go thoughtless and the moment you get into thoughtless awareness, the power of joy, that lies within it, fully reflects in your being and you get fully identified with it. The God almighty has, similarly created many beautiful sights for you and this beauty of nature is spread all over. By getting into the source of that beauty that joy is created in you. You have incarnated to have the pleasure of the joy and not to make yourself miserable unnecessarily.

Now many people have asked that what they have to do further? Now you have to do something new; you have to watch only. When you go to see a movie and think as an audience that what you have to do, the answer that you get is you have to watch. Keep on watching. You have to see the

transmigration (आवागमन), the growth of trees and the chirping of the sparrows. You have to look at the auspicious and pure smile, you have to listen to the adulating voice of Divine blessings. You have, nothing else to do. Only by seeing it you will be overjoyed with it. Now you have to watch only. Nothing remains to be done. You have nothing to do for the health of your body the way you have been doing so far, Yoga etc. You need not do many yoga exercises (yogasanas). It's alright if you do some light yoga exercises but generally you have not to take much care of your body because in it resides the God (परमात्मा). You have to respect it, no excesses should be done with it. If you want to get rid of alcohol or drugs, it's very easy. Whatever you decide about will happen. You will not get conditioned. If you have decided to get rid of alcohol you will be relieved of it. Human beings consume liquor because they do not want to face themselves. I am not asking to give up anything else but liquor because it damages your consciousness. By just watching you could get rid of drinking because now you have begun to love yourself. Automatically you will be in the state of joy. If by chance someone of you is imprisoned, you will say, 'Oh!' how nice! I will sit there and meditate. One is in one's own glory. There remains no urge for liquor or smoking cigarette. Nothing remains to be said, all the vices go away by themselves. In Bombay

condition is such that one could not get match box from Sahaj Yogis! While going to centres you have to take it along to burn incense and to light a candle. No one smokes. The chain smokers, I don't know, how they have stopped smoking! Some people used to play rummy (cards), they say, we have given up playing cards. They are enjoying their lives, they will enjoy themselves in the exams and also in the problems (mathematical). They will enjoy struggling with these problems (mathematical). They will enjoy struggling with these problems.

Now you have to take care that you do not have to struggle with things as you used to do. You are not your old self, you are a changed personality. Now you have to see whether the other people are changing with us or not. You have to look to them. There is nothing to be afraid because you were also like them. Some people think themselves to be of high position. They are so much position conscious. Some think themselves to be very rich and others very religious. All are mad. Do not look to them. All the mad people in a lunatic asylum think themselves to be very wise. When you were in that mad house, you used to think similarly. All these stupidities will go away slowly. Now you will realise the truth. Now you are blessed with that power-such a power because of which you will not be affected by your thoughts. For example, if one says to oneself, "I do not have to be angry, then ask yourself to be angry, stand before a mirror

and ask yourself to be angry. You will start laughing. In the state of anger keep laughing from within. All the time you keep laughing, while in temper one gets involved with something or the other. All vices such as lust, anger, ego, envy etc. have their own way. You have to look at it. It is a play. You should watch it, because now you are within, not without. That is what you have to do in Sahaj, you have to be within not without. While talking to others be within, that is, in thoughtlessness. Whenever you have to talk to someone, get thoughtless first. You will penetrate in them as soon as you get into thoughtlessness first; their outlook will be changed and you are already a changed being. If you are not in thoughtlessness (within), then, may be, that they pull you back. You could be pulled out because you have just gone within. For example, you have just come from the traffic and are made to sit on the mountain but you have got used to the traffic, so mentally you think yourself still to be in the traffic. You have to see, "Where am I standing?" You will know your state.

This is what Self-Realisation is. The first thing is that you are in oneness with the beauty of the whole world. You know it is something new, unique and unbelievable. No one believes it but it's a fact. You yourself will realise that you are a witness. At home if someone falls ill then everyone starts running, creating difficulties, may be just to show off, may be someone is really concerned. Nothing, absolutely no need to do



anything. You watch yourself and it will dawn upon you as to what action you have to take. Whatever you feel you should do. If you feel like putting your hand on the head, do it and if you feel like touching the foot, touch it. Whatever you are feeling, is for everyone, do it.

Second aspect is 'Truth'-that what should you tell, truth or untruth. What is truth and what is untruth. Most of the truth is man-made and man-made truth is not truth at all. Many-a-times something that appears untruth happens to be great truth. So, you do not have to decide about it. You just tell, tell in your thoughtlessness, talk to people about your state. Boldly you have to declare that this is alright, this the truth and it should be done. There is nothing to be afraid of. May be, that people take it for untruth and they laugh at you. We went to Poona, there were some stupid people who published in the newspapers that "Shri Mataji was asking the seekers to move their hands. She was mesmerising them." One gentleman asked a question that, "Why should She mesmerise people? Has She nothing else to do?" They told that we cannot be mesmerised. But you have got mesmerised Her way. Different type of people are there in the world, you cannot understand them. Now you have got Chaitanaya in you, it is flowing in you, you have seen it, you need confirmation. But you have not attained magnificence and this is the difference between you and the great saints. The magnificence that you have

attained recently is acute. It stands firmly and is not afraid to say that, that is the only truth, everything else is untruth and a myth.' This quality could be found in great people like Christ, Lord Krishna and other great saints. It could be found in Adi Shankaracharya. You read his books and you will get the confirmation. Now you read the scriptures afresh, read the Geeta and Bible afresh and you will find that confirming truths are there. But you yourself are powerful enough, you do not need support and help of anyone else. The moment you start standing by your-self, in your glory; there is no need to feel shy about it or be afraid of anything. But I find such people who hide themselves in their homes.

It is said in the Bible that the lamp is not to be kept under the table, it is to be put on some higher place. If you have really become lamps (the enlightened beings) then sit on a high pedestal and enlighten all others. You may belong to any religion. If you are a Sikh then see in their scriptures, everywhere, it is written. It's a truth which could be confirmed. For your satisfaction the great saints have written it in all the scriptures Shlokas after shlokas could be said about it and lines of Quran could also be quoted. They all confirm it, though they call it spiritual in English language, in Hindi it is called Adhyatmik and in Urdu Roohani-there are different names but 'Truth is the One.'

If you all know that aspect, then you also know that there could be no description

of truth. What could be the description of an ocean? But every moment you will see the truth, that the truth is spread all over; with your vibrations you will know of it, with the vibrations you could understand it. Then you will see vibrations everywhere-in stones, in every-thing.

If four-five chakras of a person are caught then there is no need to argue with him. Such persons are very difficult, beyond you. Immediately you will have no vibrations in your hands. A few days later, such a person will run from himself because of the hot vibrations. Have no connections with the persons who have hot vibrations. It is not an individual thought, it's something spiritual. Here there is complete darkness. The fight between the light and darkneess goes on forever. Now, so many lamps have been lit, the whole atmosphere could change if a few more lamps are enlightened. So, always keep your lamp lit, always weigh your vibrations. vibrations always flow from my photograph, they never stop. Stretch your hands towards my photograph whenever you feel burning sensations on any of your fingers. Everthing has got a meaning. You know this is Manipur Chakra, this is Vishuddhi, this is Agnya, this Swadishthana and this one is Mooladhara and in the centre of your palm is Sahasrara. Its round. If someone comes to you and tells that such-n-such person is unwell, please pray for him. You have nothing to do, clear the affected Chakra of that person and he will be benefitted. Sitting here, with the

movement of your fingers everything works out. Your attention has become Divine. You could check it yourself. Even in your feet there, all the chakras are made. Man is a great creation of the Almighty. The God Almighty has made this instrument extremely beautiful. What is needed is its enlightenment. That part is also done, but still a lot remains. Now, you have to work it out sincerely and see, what it is? Because a small lamp has been lit, you are sitting with it. There is no need to sit. When you look within other people then you will come to know what it is. We have not thought of an organisation. In Bombay, there is an institution with the name of Eternal Life. There is no membership of it, only the realised people are its members. Many peoples get realisation but then they go away.

They come again and get it. There might be half baked people amongst you also. I requested Mr. Bose, you make him chariman or do as you like to. I will stay with him. His bungalow No. is 10, you could take his telephone number also. I will send photograph etc. to him. However he is very busy person, go to him at the fixed time. Friday is appropriate. Fix that day for your weekly meditation. With attention, I will see all of you. You might have heard about the symbol of God like Lord Genesha. His carriage is mouse. **Now your attentions are your carriages. Your power resides in your attention, where ever your attention goes it works out. It is so wonderful. Sitting**



here you can exercise your power and improve everything. Everyone, you see is torturing someone or the other. Bring them on Sahasrara and set them right. On Brahmarandhra, you will be amazed, their condition has improved. There are wicked people, Dushasanas, there are saints and above all of them we (Sahajyogis) are here. Give them discretion. With the power of love people get changed because love is more powerful than hatred. Like ocean, the power of love is fathomless. As there is no end to the expanse of the sea, there is no end of the ocean of love. It rises more than hatred. If its power is lesser than the power of hatred then this world will be destroyed. You have not still understood your responsibilities. You could not realise that, this is the new age, there are new people and new dimensions. You could understand this dimension with your vibrations. The singer Siddheswari Bai who was just singing here; yesterday her condition was very bad. With great reluctance she came to me and said, "I have to undergo such and such operation, this that." I just put my hand on her head and today she has started singing! You all could do this work, there is nothing which I have not told you.

Now only a curtain remains within us. If you learn to tear out this curtain then everything could be done. But to tear out this curtain becomes difficult. However, you are realised now. So first we have to remove this curtain because this is a stupendous work.

The greatest thing in it is Love. With love we have to identify ourselves. While talking to someone we have to decide first that we have to love. It is all love, you cannot change it. As people tell me, you see everyone is giving realisation. In America, there is difficulty with the people that they misuse it? I said, "how could they misuse it? They could only give realisation, they could cure someone with it. With love you cannot harm anyone. Think yourself, if you love someone how could you harm him?. The quality of love is this that one who loves cannot think of harming the object of love.

Whatever is benevolent will take place. The only thing you have to do is to respect yourself. When you begin to respect yourselves, you get established within because it is a temple: the more you respect it the more Divine Light is there in it. With love you could get identified with it, only with love you could be one with it, in complete harmony. Only pure love could emanate from you. The one which is Chaitanya is the Truth and the Beauty. You sit in thoughtless awareness and you will be one with it.

Thoughtlessness comes only when you cross this point (Agya). You have crossed it and now you are in thoughtless awareness. Your brain used to think. Now your Sahasrara is pierced and you are above your brain. When this point is reached, you could check it with your hand. Those who are realized, should check at this point-Ardha-Bindu-and they will feel it, but those who are not, will

not feel, Are you feeling it? Slowly, feel it, take your hands slightly up-down. That is the place of the 'Ardha-Bindu' and above it is 'Bindu' and 'Valaya' is above all.

All, that was made to create this world, has also been within human beings. First 'Valaya', then 'Bindu', after that 'Ardha-Bindu', and then this (Sahasrara) then this whole kundalini was created. The Adi Kundalini, itself, penetrated in you and became your Kundalini. Some people (Deities) were placed to establish Adi-Kundalini. In the beginning it was necessary to establish someone. Lord Ganesha was established first of all. Adishakti put Shri Ganesha only on one chakra. One Ganesha on the chakra.

What is Shri Ganesha? He is purity personified. Think of it. Suppose you have not taken bath for a few days and the body is not clean. But the vibrations clean the impurities. Shri Ganesha is nothing but vibrations and purity because he is the Eternal Child. Eternal Child, and it is difficult to find one like Him in the world. His whole love is purity and purity only and because of that purity he has been placed on your Mooladhara chakra. On Mooladhara is the Mother. Its clear meaning is that in the matters of sex you have to be like children. I mean to say that when the dharma is established in you, you become child like innocent in the matters of sex. It is difficult to attain the heights of Shri Ganesha because he is a very pure soul. His radiance is

spreading all around. To penetrate within we have to be very pure otherwise no one else could be there except Shri Ganesha and His Mother.

In the process of creation Brahma Deva was made the deity of the second chakra. But before Him Lord Vishnu was created so that there is some sustainer for this Divine creation. That is the reason that we take birth from the Nabhi chakra of our Mother and then there is the creation of fatherly father. From the Nabhi, Brahma Deva was created. That's how it was done, the way someone is placed at some particular point. There is no untruth in it. You yourself could verify it. Now this void was created. It was all created, major nerves and Pelvic Plexus and around it the void and in it was the emanating love for the creation. The whole creation got caught in this love. This love is the all pervading power, in it is the creation. Now it is essential to cross this void but as I have told you earlier the God and His power is present in our heart as our soul. So as the child is born, not born as soon as he is conceived in the womb of the mother, the witness state God almighty comes in his Heart and looks like a flame, the way this thumb is. This soul is in the left heart. Many people get confused about it. They think soul is in the heart chakra, it is not in the heart chakra it is in the heart. The soul resides in this plain. Why does He not reside in the Heart Chakra? Because it is the path of Kundalini to ascend. It is in the centre (central



heart) and the soul resides in the left heart.

In the word 'Ram', 'Ra' means energy and 'm' means Mahesha, that is Shri Shiva. Mahesha is Shiva-the God who resides in our heart-when 'Ra' is united with 'm' it becomes Ram. To make the people cross the void (Bhavsagara) He has to make some arrangement. So the great power like Brahma, Vishnu, Mahesha was created and they were placed in the area of dharma. Dattatreya and Adi-gurus incarnated in this world many-a-times. He incarnated as king Janaka who was like the father of Adi-shakti. After that He incarnated in Iran as Zoraster, then as Machhendranath, then as Mohammad Saheb and Nanak Saheb. No one fought with each other. See what type of darkness you are in? Fatima, the daughter of Mohammad Saheb was the same who became daughter of king Janaka. Whom are you fighting? Think over it. The Nanaki of Guru Nanaka was none else but Janaki. Shirdi Sai Nath was also an Adiguru. They are the masters of all. Also, they are my gurus. These Adigurus taught me all this knowledge. In different incarnations they kept me teaching. Ultimately I had to come and do this work. They could not do it and now they are placing me as a Guru so that I take up the job of a Guru. There was an age when no one was willing to accept a woman as a Guru but in Kaliyuga only Mother could do this work; it is beyond the power of men. This work could not be done by force, only the love of a Mother could do it because already

there is so much pressure, tension in this world. The day it is forced upon the human being they will break down. So, love is the only way out. So this Gurudom was given to me. Everything is acceptable to me. But I didn't know the qualities of a Guru. Gurus maintain distance but Mother does not keep distance with the children. Children sit on her head. So, you people also could take liberty with Me and enjoy. Be with Me with full freedom, you will neither be afraid nor be embarrassed. There is no problem, you could come and talk to Me boldly about your problems. You could complain to Me as you do to your mother. I am freely available to you, freedom was needed, Religion was required to be discussed openly, there is no secret ,no secret about it.

Ultimately everything has to be explained very clearly. All the secrets are to be told about, everything could not be said everywhere. I am telling all this to you people who are realised ones, because non-realised will doubt it. It has some meaning only for the realised ones. You could attain much higher state than this. Lot of work was done to cross the void, some success was achieved and if you people could get it, they are helpful today. They become eternal, the founder of Jaina Dhama, Shri Mahavira and Shri Buddha are amongst them. They were born of the same Mother, born of the womb of Adi Shakti. Try to know their first relation that where were they born. But it was experimental for all of them. All of them made

experiments so that human beings could cross the void, Very few, however, could cross the void, But amass realisation could be done only in Kaliyuga, after that Shri Rama incarnated in this world but he forgot that he was an incarnation. He remained in this world as a human being, not as an incarnation so that you could rise above the Bhavasagara. He was a perfect human being. During his incarnation a few seekers could get their Realisation, there is no doubt about it. But mass realisation could not be given. Six-seven thousand years ago Shri Krishna incarnated on this earth. Right from the beginning of this creation (Aadikala) all the seekers wished to cross the Bhavasagara. The poor seekers had to face lot of problems. While meditating they were tortured. So Adi Shakti incarnated on this earth 108 times in Her perfect form. You might have read about it. Read Devi Mahatmaya and you will know what I am saying. Adi Shakti incarnated in the form of the Devi and recognised the seekers. At that time She came in the clear form of Devi. There was no Maya around Her. So seekers could not get their Self Realisation from Her. The only thing they got was Her protection. She killed Mahishasura, Shumbh-Nishumbh and many others. All the rakshasas and negative people who used to torture the saints were killed. But none of them got salvation because they were not perfect human beings. They could see only four chakras, that is, upto the heart plexus. So,

Shri Radha incarnated after Shri Sitaji. She was placed on the fifth chakra, that is Vishuddhi. She is very humane and She sang the song of love. It is said that at the time of killing the Kansa-the maternal uncle (मामा) of Shri Krishna, Shri Radha was called, Radha- 'Ra' means energy and 'dha' means the sustainer. The stream of Shri Radha starts flowing in you. Shaivite people are the followers of Lord Shiva. They do not believe in Shri Krishna. There is no difference between Shri Krishna and Lord Shiva. Shiva is placed in your heart as soul and Shri Krishna is on the Vishuddhi. Shri Krishna has sixteen powers (कलाए). Similarly you have got sixteen plexuses. It is surprising that Lord Krishna is the deity of Vishuddhi chakra which has sixteen petals. His power Radha was then divided into two, that is, Rukmani in Dwarka and Radha in Vrindavan; it is very humanly.

Shri Krishna had only one son who was 'Pranava' (Divine power), incarnate. Think of it, He was 'Om' incarnate. He incarnated on this earth. His name was Jesus Christ. Mary was his mother. He was placed on the Agya Chakra. On Agya one has to face ego and superego. You see your Agya Chakra controls your pineal (शंकुग्रन्थि) and pituitary body (पीयूष ग्रन्थि), it is scientifically proved. So he pushes away the evil spirits from your Agya because these spirits sit on superego. They could sit in ego also because 'Ida and Pingla' cross each other on Agya Chakra. So Lord Jesus put His hand on this



plexus first of all. It was done at the time of Nanak Saheb. In all ages these ghostly powers came to do encroachment. But Shri Krishna has such a destructive power that He cut their throats. So on Ágya Chakra is the name of Lord Jesus. Shri Mahalakshmi, whose praise we sing so frequently, no one has described Her. Where is She placed? She is Mary Herself. Whenever She incarnates with Her child and husband, She is very peaceful. But when she comes alone then She is tremendous. So this place (plexus) belongs to Bhagwati. The plexus of Sahasrara belongs to Bhagwati. She Herself (Devi) pierces it, all the seven chakras are there in it.

Therefore, the maya (illusion) also has seven layers. It is very difficult to recognise Her. Seven human chakras get completed here.

In nut shell I have told you what you have to do, how you have to complete your seeking. But if we talk about it methodically then we could say that there is no particular time for it. All the times we could be in the state of Thoughtless Awareness. For example, you are sitting in Thoughtless state, start thinking, then go in Thoughtlessness. After that is Thoughtless Awareness and then comes Doubtless Awareness. You will have doubts but in the second stage you get Doubtless Awareness. Doubts will be there : is right or not? What Shri Mataji has said is not right; how could it be, has it happened or not, have we got realisation or not?. This

sort of doubts will come. How will these doubts be eradicated? When you have been given a seat, I mean when you are seated on the throne and you have doubts as to whether it is a throne where I am sitting? Is it alright or not? You could check it by your own hands, that now an unparalleled energy is flowing from your hands. When you will cure people by touching them with your hands, when you will have such experiences then slowly and slowly your doubts will vanish. I mean to say that I have prepared a boat for you, now you have to launch it in the water, fight with the waves, only then you will come to know whether it is a boat or not. May be, it is wood only. The boat has been built or not could be tested by launching it into water and by rowing it on the waves. If it withstands the pressure of the waves then you will be sure of it, otherwise doubts will remain. Same way you have to test your realisation because man thinks no end of himself. One person out of our seekers went somewhere, a swamiji was sitting with a hoasted flag. Many people came there, had their food etc. This gentleman went to America with us, with the movement of his hand he used to do things. You could also do it. With the movement of your hands you could raise the kundalini of someone. Sitting here you move your hands and see how nice it is that the kundalini of the other person will move with your fingers. The energy which is flowing from your hands will do it. So this way that sadhu used to pretend to awaken

the kundalini of hundreds of Americans. Since many people were going to him, one of our Sahajayogi also went to him. I come to know of everything as to who is hanging about and where. When he returned, he was miserable. I asked, "Why did you touch his feet?" He said that since every one was touching his feet, I also touched. I said you have to touch the feet of only those who are older to you. I asked him what was his condition, what was the condition of his kundalini, is he Realised? He replied, "No, he is not Realised." His kundalini is overturned. I asked him, you raise the kundalini of thousands of seekers with the movements of your fingers. Why could you not think that you should not have touched his feet?" His kundalini is overturned; at least he should have been a Realised person to touch his feet. One should touch the feet of one who is higher than yourself otherwise why to touch the feet at all? You know everything. You know the reason of it. You have the complete knowledge of it. You are so expert in it, why did you touch his feet? Egolessness comes in you. You all live in such an unassuming way that no one could believe that you are Realised. One becomes egoless. Completely egoless. He feels, how it has happened, how that has happened? But it has happened. If this transformation has taken place in you, then you should think, "Why has this transformation taken place in you only?" Many people live in Delhi. Why we have specially been given Realization?

There might be some reason. You might have been seeking for many lives. It is your right. You are saints, saints of high orders. You are not aware of this fact. If you were not saints, how could I give Realization to you? Can I give realization to stones? Thousands of people come but I cannot give realization to all of them. Only a few of you have got it. Definitely there is some reason for it. But you cannot believe it. You think, how could it be? This problem comes because of your egolessness. In a very ordinary way; you neither change the style of your clothes nor any other showing-off. But you will see that you have become peaceful within. You are now altogether different being. The style of your talking and doing things is of a realized one. And you will become expert. You know about others that such and such chakra of this person is catching, That is why he is behaving abnormally. Let me set it right. And within a little time that person is cooled down. Some people come to quarrel with me, but Sahajayogis calm them down by moving their Kundalinis. They play many tricks and within a little time such people sit quietly. One fellow came and started quarreling. It was the time for him to take Sesamum (तिल). They put the Sesamum on their hand and vibrated them. As soon as he ate those sesamum, immediately he went into meditation. If someone is disturbing you too much then put your finger in the water and make him drink that vibrated water. The work will be done. Chaitanya will awaken within that person. But



still you are newly born children. Small child gets ill very soon, similarly you also catch very soon. You have to stick to your position otherwise you will descend very soon. Don't leave your position, do not be shaken, stick to your place because the boon given to you is such that one could be unsteady (डावांड़ोल). I am telling it to you. Therefore, power of collectivity (संगशक्ति) should be there. There are people amongst you who come and tell, "Shri Mataji my head is catching." Collectively you could clear the catches, whether it is in your waist, Aganya Chakra or any where else, you could clear it yourself. Now these (Sahaj Yogis) are your brothers and sisters. This is the new world of love. These are your relatives. You know them. At the time of difficulty, you will be surprised that they will run to help you. Because deities are there with you for your protection. Suddenly if you think about someone, immediately you find him before you and saying, "I don't know how I came here! I was going this way, I thought to come upto you. "All your works are done, you will not meet with accidents. Deities are hovering over you. If one Sahaj Yogi is there at the place of accident then all others are also saved because of him. Many things will happen. You keep on watching and

recording. Watch the awakening and movements of your Kundalini. There is going to be no problem in it. Sometimes it will titillate here and move there; sometimes it will enlighten here and sometimes there, your consciousness, which is connected to all these things, will get enlightened and it will enlighten the whole world.

Now you are sitting here, but you are not aware that thousands and millions of rays are emanating from you. You will see that the whole atmosphere of Delhi will change; you will see it. I went to Calcutta only once. Have you seen the atmosphere there? I said it there itself that the atmosphere of Calcutta will change. I stayed there for eight days and the whole atmosphere changed, the minds of people were calmed down. Today, in Maharashtra it is going on very well. The reason is that many people have got their Realisation. Now it is the turn of Delhi State. The Kundalini of the whole world is situated in India. How tremendous! The seat of Kundalini of the whole world is in India. If our India improves then whole world will improve. The Sahasrara of the whole world is here. So, I need thousands and thousands of Indians who could give Realisation to others.

**May God Bless you.**